□□□□□ □□□□

जनसत्ता 20 अगस्त, 2014 : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आम चुनाव में भाजपा को मिली अपूर्व सफलता के लिए अमित शाह को 'मैन ऑफ द मैच' कहा है।

वे पार्टी की राष्ट्रीय परिषद द्वारा अध्यक्ष पद पर शाह की नियुक्ति की पुष्टि किए जाने के अवसर पर उनकी प्रशंसा कर रहे थे। पार्टी के दूसरे नेताओं ने भी शाह की तारीफ में कसीदे पढ़े। इन सब टिप्पणियों से ऐसा लग रहा था मानो शाह चुनाव में सक्रिय न होते तो भाजपा सत्ता में न आ पाती। लेकिन दूसरी ओर संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने इन टिप्पणियों पर अपनी असहमति व्यक्त की है। उनका कहना है कि इसके पहले पार्टी भी थी और ये नेता भी थे, लेकिन चुनावों में अनुकूल परिणाम क्यों नहीं आ पा। उनके मुताबिक चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली जबर्दस्त सफलता का श्रेय अगर किसी को दिया जाना चाहिए तो वह इस देश की जनता को, जो बदलाव के लिए आतुर थी। परिवर्तन की जन-आकांक्षा ने ही भाजपा को इस मंजिल तक पहुंचाया। इसलिए यह सफलता व्यक्तिपरक नहीं मानी जा सकती।

जहां तक चुनाव परिणामों का संबंध है, 1989 के बाद यह पहला अवसर है, जब किसी एक पार्टी को बहुमत मिला है और उसने सरकार बनाई है। लेकिन मोदी को मिले बहुमत को अपरिमित उत्साह का परिचायक नहीं कहा जा सकता। यह तो माना जा सकता है कि हिंदीभाषी प्रदेशों में मोदी के अभियान का खासा प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा असम और पूर्वोत्तर के कुछ अन्य राज्यों में भाजपा को पहली बार विजय हासिल हुई है। बंगाल और तमिलनाडु में भी उसका खाता खुला है, जहां पहले भाजपा की मौजूदगी नाममात्र को थी। केरल में इस बार भी भाजपा को कोई सीट नहीं मिल पाई है। लोकसभा की पांच सौ तैंतालीस सीटों में से भाजपा को कुल दो सौ बयासी सीटें मिलीं, यानी बहुमत से दस अधिक, लेकिन इसे इतिहास की शान और गुमान वाली बात नहीं कहा जा सकता।

पर भाजपा के अपने रिकार्ड के लिहाज से देखें तो ये चुनाव नतीजे जरूर ऐतिहासिक थे। भाजपा पहले भी केंद्र में एक बार सरकार बना चुकी है, मगर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में बनी वह सरकार करीब दो दर्जन दलों के गठबंधन से ही संभव हो पाई थी। इस बार भी राजग के रूप में भाजपा की अगुआई वाला गठबंधन मौजूद है, पर मोदी सरकार लोकसभा में बहुमत के लिए किसी अन्य पार्टी की मोहताज नहीं है। क्या इसे शाह के करिश्मे ने संभव किया? अमित शाह उत्तर प्रदेश के भाजपा के प्रभारी थे, जहां की अस्सी सीटों में भाजपा को इक्हत्तर सीटें हासिल हुईं। अपना दल की दो सीट जोड़ लें तो यह आंकड़ा तिहत्तर तक पहुंच जाता है। मगर कई दूसरे राज्यों में तो भाजपा को इससे भी ज्यादा सफलता मिली। गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, उत्तराखंड की सभी सीटें उसकी झोली में आ गिरीं। फिर शाह को क्यों महिमामंडित किया जा रहा है?

देश में एक पुरानी कहावत है 'पुरुष बली नहिं होत है, समय होत बलवान, भीलन लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बान'। इस प्रकार अगर स्वतंत्रता के बाद देश में हुए चुनावों का मूल्यांकन किया जाए तो वह भी यही सिद्ध करता है कि उस समय किन भावनाओं की प्रबलता थी। जब देश आजाद हुआ तो उसका उत्साह चारों ओर था, लेकिन देश के विभाजन और उसके फलस्वरूप हुई मार-काट, हिंसा लोगों को पसंद नहीं थी। शरणार्थियों का आना-जाना और उनके दुख से भी लोग पीड़ित थे, लगता यही था कि इस दुख के आगे लोग स्वतंत्रता से मिलने वाली खुशी खो देंगे।

जब 1952 में संघ परविार का राजनीतकिअंग भारतीय जनसंघ गठति हुआ तो उसने अखंड भारत का नारा दयिा, क्योंकिउसकी समझ यह थी कदेश इस बंटवारे को स्वीकार करने केलि तैयार नहीं है इसलि यह ब। चुनावी मुद्दा होगा, जसिका मुकाबला कांग्रेस नहीं कर पा गी

चुनाव केपहले ही कांग्रेस से सोशलस्टि पार्टी अलग हो चुकी थी वह वभिन्नि आर्थकिमुद्दों पर अपना अलग संघर्ष चला रही थी वभिाजन के फलस्वरूप और शरणार्थियों की उपस्थतिि केकारण सांप्रदायक्तिा में भी वस्तिार हुआ था उस समय दो और सांप्रदायकिदल पहले से चले आ रहे थे, हदिू महासभा और रामराज्य परषिद का गठन हो चुका था लेकनि चुनाव परणिामों की दृष्टि से देखा जा तो इन तीनों पार्टयिों को मलिा कर दस सीटें भी नहीं मलि पाई थीं कांग्रेस चुनाव भी जीती और उसकी सरकार भी बनी इसलि यह मानना प गा कि लोगों में स्वतंत्रता केबाद नई व्यवस्था केप्रति कतिना उत्साह और कतिनी जागरूकता थी और वे यह समझते थे कि जो बदलाव होने जा रहा है वह आम आदमी केहति में ही होगा

गांधीजी की हत्या देश में ब ते हु संप्रदायवाद केफलस्वरूप स्वतंत्रता-प्राप्ति केछह महीने केभीतर ही हो गई थी राजा-महाराजा भी अपनी पुरानी हैसयित की बहाली केलि उत्सुक थे; वे अपने अनुभव का तर्क दे रहे थे कि हम सरकार चलाना जानते हैं, अना यिों केहाथ में सत्ता न सौंपा लेकनि उन्हें भी वफलिता ही मलिी कुछ गनि-चुने राजा-महाराजा ही जीत पा और कई तो अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की सोच कांग्रेस में शामलि हो ग प्रथम आम चुनाव 1952 में हुआ था 1957 में केरल में कम्युनस्टि पार्टी को बहुमत मलिा और वहां पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी, जसिे कांग्रेस ने चुनौती माना और उसे बर्खास्त कर पहली बार कई दलों को मलिा कर संयुक्त सरकार बनाई

वर्ष 1967 में गैर-कांग्रेसवाद का जोर चला और सात राज्यों में कांग्रेस-वरिोधी संवदि सरकारें बनीं, जसिका अर्थ यही नकिला जा गा कि लोग कांग्रेस से संतुष्ट नहीं थे, बदलाव चाहते थे 1971 केपहले कांग्रेस वभिाजति हो गई और प्रधानमंत्री इंदरिा गांधी ने वभिाजति कांग्रेस का नेतृत्व संभाला पुरानी कांग्रेस केतमाम दग्गिज कसाथ हो ग, जो यह कह रहे थे कि इस बार इंदरिा गांधी को संसद में वपिक्ष का नेता-पद भी नहीं मलि पा गा लेकनि इंदरिा गांधी ने समाजवाद का नारा दयिा, बैंकों का राष्ट्रीयकरण कयिा, राजाओं का प्रविीपर्स समाप्त कयिा, अधक्तिम आय पर पाबंदी की ओर आगे ब ीं, देहात की खेती और शहरी भूमि की हदबंदी की चर्चा चली, जसिकेफलस्वरूप उन्हें 43.68 प्रतशित वोट और तीन सौ बावन सीटें मलीं लेकनि जब वे अपने घोषति लक्ष्य पर नहीं ब पारूं और चुनाव रद्द होने केबाद जयप्रकाश नारायण केजनांदोलन से घबरा कर उन्होंने आपातकाल लागू कयिा तो यह उनकी प्रतष्ठिा घटाने का ही कारण बना

जब 1977 में आम चुनाव हु तो दो प्रदेशों को छो कर सारे देश में कांग्रेस हार गई रायबरेली से अपनी और अमेठी से बेटे संजय की सीट भी नहीं बचा पारूंइ लेकनि तब भी उन्हें कसौ चौवन सीटें और 34.52 प्रतशित मत मलि थे यह माना जा रहा था कि इंदरिा गांधी केप्रति जन्मा उत्साह जनाक्रोश में परविर्तति हो गया था जसिका सामना वे नहीं कर पारूंइ 1977 में कांग्रेस-वरिोधी दलों को मलिा कर जनता पार्टी की जो सरकार बनी वह वैचारकिवसिंगतयिों, सत्ता-मोह और कदूसरे को नीचा दखिाने की प्रवृत्ति से मुक्त नहीं हो पाई, इसलि सत्ताईस महीने में ही उसका अवसान हो गया 1979 केअंत में जब चुनाव हु तो पुन: कांग्रेस को बहुमत मलि गया

वर्ष 1984 में इंदरिा गांधी की उनकेसुरक्षाकर्मयिों द्वारा ही की गई हत्या केबाद राजनीति से अलग रह कर वमिान चलाने वाले राजीव गांधी ने जब सत्ता संभाली तो मां की मृत्यु केप्रति सहानुभूति तो थी ही, लोगों को यह भी लग रहा था कि राजनीति केखेल से परे दखिने वाला यह युवक देश की बगि ी हालत को बदलने और अच्छा बनाने केलि जरूर प्रयत्न करेगा यही कारण था कि उन्हें संसद में चार सौ पांच सीटें मलीं और इस बयार में भाजपा महज दो सीट पर समिट गई उसकेब -ब नेता और अटल बहिारी वाजपेयी भी हार ग लेकनि कांग्रेस केप्रति यह जन-उत्साह पांच वर्षों तक कायम नहीं रह पाया 1989 केचुनाव में कांग्रेस अल्पमत में बदल गई और कनया प्रयोग हुआ- भाजपा और वामपंथयिों ने मलि कर कांग्रेस केवद्रिोही नेता वश्विनाथ प्रताप सहि को प्रधानमंत्री बनाया

लेकिन यह प्रयोग मंडल और कमंडल की ल□ाई की भेंट च□ गया□ जब पुन: चुनाव हु□, तो उसमें भी कांग्रेस को बहुमत नहीं मिल पाया□ जो□-तो□ के बल पर उसकी सरकार तो बनी, लेकिन वह अपनी राह निर्धारित नहीं कर पाई□

परिणामस्वरूप बाद के चुनावों में उसे बहुमत नहीं मिला□ बाद के दो वर्षों में कांग्रेस समर्थित सरकारें बनीं जिन्हें तीसरे मोर्चे की सरकारें कहा गया□ बाद में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नाम से सरकार बनी और चली, लेकिन इसकी दिशा और नीति भी लोगों को पसंद नहीं आई□ फिर अल्पमत कांग्रेस ने यूपी□ के नाम पर सरकार बनाई और पांच वर्ष बाद उसने वापसी भी की□ लेकिन इस अवधि में यूपी□ सरकार पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे, कई ब□े घोटाले उजागर हु□□ महंगाई भी बेकाबू बनी रही□

लिहाजा, इस बार के आम चुनाव उसे लोगों ने अस्वीकार किया□ नरेंद्र मोदी ने संप्रदायवाद को अलग रख कर, अपनी पुरानी छवि के विपरीत यह बता कर कि वे वर्तमान विसंगतियों का मुकाबला करेंगे और देश को अच्छे दिनों की ओर ले जा□ंगे, भाजपा को असाधारण सफलता दिलाई□ लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि नरेंद्र मोदी को लोगों ने □क स्वयंभू, कारगर, योग्य और भावी नीतियों के वाहक के रूप में स्वीकार कर लिया है□ उनके समर्थक पत्रकार भी यही मानते हैं कि उनकी नीतियों की सबसे ब□ी विसंगति निगमित क्षेत्र का हित-पोषण है, जिसका मुख्य लक्ष्य मुनाफा है□ और काला धन जो पूरी अर्थव्यवस्था पर कब्जा जमा□ बैठा है, चुनावों में जिसकी खास भूमिका होती है उससे निपटना अभी बाकी है, बल्कि सरकार भी इन दोषों को अंगीकार करने का परिणाम है□ इसलि□ परिवर्तन की अभिलाषा कितनी पूरी होती है, सरकार की नीतियों की स्वीकार्यता भी इसी से तय होगी□ इसे व्यक्तिपरक नहीं माना जा सकता□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta